



हमारे बालासाहब

दत्तोपंत ठेंगडी

प्रथम आवृत्ती: जुलाई १९९७

अक्षरजुळणी : आस्वाद प्रकाशन

प्रभादेवी, मुंबई - ४०००२५

प्रकाशक: साप्ताहिक विवेक

५/१२ कामत औद्योगिक वसाहत, ३१६, वीर सावरकर मार्ग,
प्रभादेवी, मुंबई - ४०००२५.

मुद्रक: सिद्धी ऑफसेट प्रा. लि.

५/१२ कामत औद्योगिक वसाहत, ३१६, वीर सावरकर मार्ग,
प्रभादेवी, मुंबई - ४०००२५.

मूल्य: ५ रुपये फक्त

हमारे बाला साहब

दत्तोपंत ठेंगड़ी

हमारे बाला साहब

प. पू. बालासाहब के साथ कई दशको तक घनिष्ठ संबंध रहा। ऐसे मेरे जैसे व्यक्ति के लिये आज के इस अवसर पर कुछ भी बोलना कितना कठिन है इसकी कल्पना आप कर सकते हैं। शायद यदि किसी को कल्पना न होगी तो अपनी भावनाओं के बारे में हमारे मान्यवर जगजीत सिंह जी ने जो बताया कि प्रगट करना बहुत कठिन हो जाता है। उसी का अनुभव मैं ले रहा हूँ जैसा कहा गया कि खामोश गुप्तगूं है “आज बेजुबाँ है जबाँ मेरी” हम में से बहुत सारे लोगों की अवस्था इस समय एसी ही होगी, ऐसा मैं समझता हूँ किन्तु एक कर्तव्य के नाते इस समय पर कुछ बोलना है इसी नाते बोलने का साहस कर रहा हूँ।

यह मासिक स्मृति दिन मनाया जा रहा है। मा. सरकार्यवाह श्री. शेषाद्री जी के आदेश के अनुसार ‘सामाजिक समरसता’ दिन इस नाते इसको हम मना रहे हैं। बालासाहेब का पूरा जीवन हमारे सामने है। His life was an open book कई नेताओं का जीवन इतना open नहीं रहता। बालासाहब का जीवन open book जैसा जीवन रहा। जीवन के अंतिम चरण में विकलांग अवस्था के कारण उनको कितनी असुविधा बर्दाश्त करनी पडी, कष्ट बर्दाश्त करने पडे, हममें से बहुत लोगों ने उनका दर्शन करते हुए यह आखों से देखा है। कई वर्ष तक वो विकलांग थे किन्तु इसके कारण एक भ्रांति जिन्होंने उनको नजदीक से देखा नहीं उनको मन में रही कि विकलांग है, अब कुछ काम नहीं कर सकते। निरूपयोगी हो गये ऐसी भ्रांति अपरिचित लोगों के मन में हो सकती थी। वह गलत थी। भीष्म पितामह

सरशैय्या पर थे, हलचल नहीं कर सकते थे किन्तु उस अवस्था में भी युधीष्ठर ने भगवान श्री कृष्ण से पूछा “धर्म और अधर्म इसका निर्णय कर लेना चाहता हूँ” तो स्वयं भगवान श्री कृष्ण ने कहा इसका निर्णय करने के लिए अधिकारी पुरुष भीष्म पितामह ही है। मैं तुमको उनके पास ले जाता हूँ ठीक यही अवस्था जब सरशैय्या पर बालासाहब थे, हलचल नहीं कर सकते थे तो भी सभी को मार्गदर्शन करना, सलाह देना, सभी की बातें सुनना ये सारा कार्य उनका चल रहा था। शरीर विकल था, बुद्धि विकल नहीं थी, यही विशेषता थी। Intellectual capacity, memory intact थी और इसके कारण कोई भी समस्या लेकर भी जाता था, उसका उचित मार्गदर्शन करते थे। कोई भी मिलने को आया तो उसको ठीक ढंग से पहचानते थे। उसके बारे में, उसके परिवार के बारे में, उसकी शाखा के बारे में पूछते थे। सारे समाचार पत्र, जो भी उपलब्ध थे, हर दिन पढ़वा लेते थे। टी. वी. पर आधुनिक समाचार क्या है यह भी बारीकी से देखते थे। राष्ट्र जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में क्या हो रहा है, इसका इनका निरीक्षण बराबर चलता था। sharp Intellect, sharp memory आखिर तक थी। बिलकुल अंतिम चरण तक थी। और इसी कारण राजनैतिक क्षेत्र में क्या उथल-पुथल हो रही है, सामाजिक क्षेत्र में क्या गलत बातें हो रही है सभी बातों का उनका निरीक्षण रहता था। और इस दृष्टि से मार्गदर्शक के नाते भीष्म पितामह के समान उनकी भूमिका हमेशा रहती थी।

संघ के कार्यकर्ता, इतना ही नहीं तो स्वयंसेवकों द्वारा चलाई जा रही विभिन्न संस्थाएं, उनके कार्यकर्त्तओं को भी मार्गदर्शन करने का काम उस विकलांग अवस्था में भी उन्होंने किया यह एक उल्लेखनीय बात है। उनकी सारी उत्कृष्ट भावनाएँ संघ के स्वयंसेवक के नाते, सर संघचालक के नाते, उस विकलांग अवस्था में भी यथापूर्व कायम थी। वे हमेशा स्वयंसेवक की ओर अपने पुत्र के जैसे देखते थे। पितृतुल्य भावना उनके मन में थी। कुछ लोगों ने ऐसा कहा कि भाई इनकी मृत्यु हुई तो उनको बड़ा शोक हुआ। स्वयंसेवकों पर

कोई भी आपत्ति आती है तो उनका दिल दर्द करता था और इसलिये सबको आश्चर्य हुआ कि जिस समय कार्यालय के एक कमरे से दूसरे कमरे में जाना wheel chair पर भी कठिन लगता था, ऐसे समय जब उन्होंने पढ़ा की मद्रास में अपने संघ के कार्यालय में Bomb Blast हुआ है, हमारे कुछ स्वयंसेवक हत और আহত हुए है, उनसे रहा नहीं गया और आखिर में डॉक्टर के Advice के विरुद्ध जाते हुए, हर तरह की “रिस्क” लेते हुए वो उस अवस्था में भी मद्रास गये। जिनकी मृत्यु हो गयी थी ऐसे लोगों के परिवार जनों को स्वयं व्यक्तिगत रूप से मिले। जो আহত हुए थे, घायल हुए थे, उनको सांत्वना दी और वे फिर वापस आये ऐसी अवस्था में भी, जब एक कमरे से दूसरे कमरे में जाना उनके लिये कठिन था। इतना साहस उन्होंने दिखाया इतनी ताकत उन्होंने जुटाई तो सभी स्वयंसेवको के बारे में कितना प्रेम कितनी पितृतुल्य आत्मीयता, एकात्मता उनके मन में थी। यह विकलांग अवस्था में भी उनका दर्शन हम लोगों ने किया।

जीवित अवस्था में उन्होंने जो कार्य किया वह हमारे सामने है। लेकिन विशेष रूप से मैंने इसका उल्लेख इसलिए किया कि बहुत लोगों के मन में भ्रांति देखी थी कि एक बार विकलांग होने के बाद, कार्य के लिए उनका मार्गदर्शन, योगदान नहीं रहा , ऐसी बात नहीं थी। विकलांग अवस्था में भी उनका योगदान था, आखिर तक यह योगदान रहा यह कहने की प्रमुख बात थी।

वैसे उनके जीवन के बारे में पिछले एक माह में बहुत कुछ कहा गया है, बहुत कुछ लिखा गया है। इसके कारण कोई नई बात बताने की है ऐसा मैं नहीं समझता। देवरस परिवार यह आंध्र प्रदेश का है, महाराष्ट्र का नहीं। आंध्र-प्रदेश में चंद्रपुर के मार्ग से, वाया चंद्रपुर कई तेलगु परिवार नागपुर में आये। हेगडेवार परिवार उसी में था। बापूजी अणे उसमें थे। बाल शास्त्री हरदास का परिवार था। कन्नमवार का परिवार था। कई तेलगू परिवार वाया

चंद्रपुर, नागपुर में आये, उसी में से देवरस जी का परिवार था। उनका पहला नाम देवराजू ऐसा था। नागपुर में स्थायी होने के बाद देवराजू का मराठी करण देवरस हो गया। आचार्य विनोबा भावे जो शाब्दिक श्लेष करने में चतुर थे वह हम लोगों से कहते थे कि देवरस का अर्थ तुम नहीं समझते। सभी देवताओं का रस निकालकर जो तैयार हुआ वह तुम्हारा देवरस है। विनोबा भावे ऐसा शाब्दिक श्लेष करते थे। उनके पिताजी बहुत धार्मिक थे, कर्मठ थे। नागपुर में मोती बाबा जामदार करके एक श्रेष्ठ संत थे। जिनको दत्त अवतार कहा जाता था। उनके भक्त थे। उनकी माताजी, वह भी बहुत धार्मिक थी और प्रमुख बात यह थी कि बहुत कर्मठ और एक तरह से व्रती उनको कहना, यह ठीक होगा। ऐसा उनका व्यवहार था। परिवार में गृहिणी के नाते उनको ही सब काम करने पड़ते थे किन्तु किसी शारीरिक न्यून या बीमारी के कारण Medical Advice था कि उन्होंने केवल छाछ पर जीवित रहना और कुछ लेना ही नहीं, केवल छाछ! दिन में, सुबह, रात को केवल छाछ। तो जीवन का आधे से अधिक हिस्सा बालासाहब की माता जी ने केवल छाछ पीकर बिताया और उसी अवस्था में घर का भी तो सब काम करती थी और हम बच्चे थे तो हम लोगों को आश्चर्य होता था कि इधर पूरण पोली, वडा ऐसे सारे भोजन के पदार्थ वह बनाती थी। सब लोगों को परोसती थी और स्वयं केवल छाछ पीकर रहती थी। इसमें उनका जो संयम है, व्रती जीवन है उसका परिचय उस समय भी हम लोगो को होता था। ऐसा उनकी माताजी का स्वभाव था। बालासाहब के मन में माता जी के बारे में बहुत ही प्रेम आदर था। आखिरी बीमारी में उन्होंने अपने माताजी का बक्सा, माताजी का फोटो, उनका जो गांव है, आमगांव कारंजा, वहाँ से मंगवाया था और इसका कारण बालासाहब के जीवन में माताजी का योगदान भी महत्वपूर्ण रहा। सूझबूझ आने के बाद या सूझ बूझ आते ही बालासाहब राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में प्रविष्ट हुए और उन्होंने संघ के वायुमंडल के अनुकूल माताजी से कहा कि मेरे साथ भोजन के लिए सभी जाति के लोग आयेंगे।

दलित भी आयेंगे। उस समय मैं यह नहीं सुनूंगा कि ये दलित हैं तो मेरे रसोई घर में रोटी नहीं खा सकता। मेरे साथ बैठकर खायेंगे। रसोई घर में बैठकर रोटी खायेंगे। माता जी ने कहा मेरी ओर से कोई आपत्ति नहीं है। उन दिनों में आप कल्पना कीजिए जब वे बाल स्वयंसेवक थे। उन दिनों में orthodoxy इतनी प्रबल थी की जहाँ माता पिता दोनो बहुत कर्मठ, वहाँ यह बाल स्वयंसेवक आग्रह करता है कि मेरे दलित बंधु भी मेरे साथ आयेंगे और रसोई घर में खाना खायेंगे। बाहर नहीं तो माताजी ने यह बात स्वीकार कर ली। यह एक अनोखी बात उन दिनों मानी गयी थी। सामाजिक समता परिषद् सामाजिक मंच आदि बातें तो सब नयी है। मैं तो समझता हूँ उनके बाल्य अवस्था से ही यह सामाजिक समरसता का प्रारंभ उनके रसोई घर से उन्होंने किया था और माताजी के सहयोग के कारण यह हो सका। इस तरह की माताजी भगवान की दया से उनके लिए उपलब्ध थी वह हमारे लिये भी एक सौभाग्य की बात थी। जब से सूझ-बूझ आयी तब से शाखा में शामिल हुए कुश पथक यह बाल स्वयंसेवकों का पथक उन दिनों में बहुत ही प्रसिद्ध था। प. पू. डॉक्टर जी का विशेष ध्यान कुश पथक के स्वयंसेवकों पर रहता था। बहुत आशाएँ उन्होंने लगायी थी और कुश पथक में से सभी वैसे ही स्वयंसेवक, कार्यकर्ता निर्माण हुए, जिन्होंने डॉक्टर साहब की आशा फलीभूत करने का प्रयास किया। वहाँ से धीरे-धीरे संघ के कार्य में उनकी प्रगति हुई। संघ के बारे में आप जानते है कि संघ में हर एक को रगड़ में से जाना पड़ता है ऐसा नहीं होता कि अच्छा भाषण देता है तो उसको अधिकारी बना दो, ऐसा नहीं होता। जो संघ की रगड़ है, स्वयंसेवक, गटनायक, शिक्षक, मुख्य शिक्षक, प्रचारक, जिला-प्रचारक, विभाग-प्रचारक, या कार्यवाह, जि. कार्यवाह, विभाग-कार्यवाह, एक रगड़ में से हर एक को जाना पड़ता है। तो सभी तरह के काम करते करते उन्होंने संघ कार्य में प्रगति की। जिस विभाग में उनका जन्म हुआ, उनका

मकान जिस विभाग में था वह विभाग पुराने नागपुर में था। नागपुर के हम दो हिस्से उन दिनों में मानते थे। जो ब्रीज है, ब्रीज के उधर का नागपुर, याने Modern इधर का याने पुराना। तो पुराने नागपुर में उनका मकान था और इसके कारण तथा कथित पिछड़ी जातीयाँ, तथा कथित दलित जातीयाँ, ऐसे लोग उनके अगल बगल में रहते थे। तो सारा वायुमंडल ऐसा था। शाखा पर भी दलित और पिछड़े लोगों की संख्या अच्छी रहती थी। उन सब को लेना, संभालना, संस्कार देना यह काम करना पड़ता था और वह भाषण से नहीं करते थे।

संघ कार्य के बारे में आप जानते हैं कि संघस्थान पर आना पड़ता है। संघस्थान कहाँ मिलेगा? पहला ही संघस्थान बालासाहब को ऐसा मिला कि एक टूटा हुआ मकान, खंडहर, उसके सामने मैदान ऐसा ही पड़ा था। कोई उपयोग नहीं लेता था। जो केवल खंडहर था, तो सुबह शाम को लोग प्रातःविधी के लिये उसका उपयोग करते थे। इसके कारण वहा गंदगी रहती थी। वहाँ शाखा लगाने का सोचा तो वह गंदगी दूर करने का काम पहले करना पड़ा और दूसरे लोगों को कहने के पहले स्वयं बालासाहब सामने हो गये। उन्होंने वह गंदगी अपने हाथ से उठायी, बाकी फिर स्वयंसेवकों ने यह काम पूरा किया। तो यहाँ ऐसे छोटे छोटे कामों से लेकर सबके साथ खेलना कबड्डी बहुत अच्छा खेलते थे। सबके साथ खेलना एक Spirit सभी लोगों में रह सके इस तरह से शाखा चलाना, होते होते नागपुर कार्यवाह तक उनकी प्रगती हुई और नागपुर कार्यवाह के नाते जितने भी कार्य आवश्यक थे वो बहुत ही उत्कृष्ट ढंग से उन्होंने किये। विभिन्न शाखाओं से संबंध, हर एक कार्यकर्ता को बराबर देखना, कौन कार्यकर्ता है, कैसा है? उसका स्वभाव कैसा है? दोनो के बारे में

Equations कैसे हैं, ये सारा देखना, कार्यकर्ताओं को संस्कारित करना और विशेष बात कि सारे जो कार्यक्रम होते हैं, जैसे संघ शिक्षा वर्ग है उसकी व्यवस्था। शीत शिविर है उसकी व्यवस्था। उन दिनों शीत शिविर की व्यवस्था याने सारे शारीरिक कार्य स्वयंसेवक को ही करने हैं। इस तरह की व्यवस्था थी। बिल्कुल तंबू ठोकने से लेकर सभी काम स्वयंसेवक करते थे। उसमें पहल करने का काम स्वयं बालासाहब करते थे। जिसके कारण बाकी लोगों को प्रेरणा और प्रोत्साहन मिलता था। इस तरह के सभी कार्य नागपुर कार्यवाह के नाते उन्होंने किये। इतना ही नहीं तो कार्यवाह तो नागपुर के थे लेकिन नागपुर यह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का केन्द्र है, उसकी एक विशेष जिम्मेदारी है, ऐसा प. पू. डॉक्टर जी कहते थे। उसके अनुसार नागपुर में रहते हुए बाकी देश में प्रचार कार्य करने के लिए कार्यकर्ताओं को, प्रचारकों को निकालना ये महत्वपूर्ण कार्य अच्छी संख्या में बालासाहब ने किया और नागपुर के बाहर भी जब संघ शिक्षा वर्ग शुरू हुए तब वहाँ प्रारंभिक दिनों में मुख्य शिक्षक भेजना, वह भी नागपुर से ही भेजे जाते थे। तो संघ शिक्षा वर्ग में मुख्य शिक्षक, शिक्षकों को भेजना और प्रचारक के रूप में काम करने के लिये लोगों को Motivate करना इस तरह, नागपुर में रहते हुए संपूर्ण देश में कैसे यह कार्य का वटवृक्ष किस तरह से फैलेगा उसके लिए परिश्रम करना उनका काम रहा।

प. पू. डॉक्टर जी के समय ही प. पू. श्री गुरुजी का संघ में प्रवेश हुआ और ऐसा दिखता है कि डॉक्टर जी के मन में श्रीगुरुजी और बालासाहब इनके बारे में कुछ विशेष Equation होगा। जैसे सन् 1939 में कलकता में संघ कार्य शुरू करने के लिए श्रीगुरुजी को भेजा गया और थोड़े ही दिन के बाद उनके सहायक के नाते बालासाहब को भेजा गया। तो दोनों के विषय में कुछ विशेष

भावना डॉक्टर जी के मन में थी ऐसा स्पष्ट दिखता है और यह भावना का अनुभव दोनों करते थे। इसके कारण दोनों की जो परस्पर विषयक भावनाएँ थी ये बहुत ध्यान में रखने लायक थी।

श्रीगुरुजी सर संघचालक हो गये बालासाहब कभी नागपुर कार्यवाह थे, कभी सह-सरकार्यवाह थे। बाद में सर-कार्यवाह बने लेकिन पहले नागपुर कार्यवाह और सह-सरकार्यवाह ही थे। उस समय भी बालासाहब का जब उल्लेख होता था, तब श्री गुरुजी कहते थे जिन्होंने डॉ. हेडगेवार जी को देखा नहीं, उन्हें बालासाहब को देख लेना चाहिए, तो फिर उनके ख्याल में आयेगा की डॉक्टर जी कैसे थे। एक समय श्री गुरुजी तांगे में जा रहे थे। उनके सामने ही रास्ता दिखाने के लिये बालासाहब चल रहे थे। तो स्वाभाविक रूप से गुरुजी के मुख से शब्द निकले कि असली सर-संघचालक तो पैदल रास्ते से जा रहे हैं और नकली सर-संघचालक हम तांगे में बैठकर जा रहे हैं। मजाक में लेकिन जो स्वाभाविक रूप से शब्द निकला। एक समय उन्होंने कहा “संघ के संविधान में एक समय दो सर-संघचालकों की नियुक्ति करने की गुंजाईश नहीं है। यदि होती तो फिर शायद आज की अवस्था नहीं होती। दो सर-संघचालक एकदम नहीं नियुक्त हो सकते इसलिए मैं सर-संघचालक हूँ और ये सरकार्यवाह हैं।” माने कितनी भावना उनके बारे में श्रीगुरुजी के मन में थी यह हम देख सकते हैं। उनकी भी भावना श्रीगुरुजी के बारे में जो थी वह भी देखने योग्य है। मासिक श्राद्ध के समय सर-संघचालक पद ग्रहण करते समय उनका जो भाषण हुआ उन्होंने वर्णन करते हुए कहा उनके वाक्य थे “Under his benign leadership, I was functioning as a manager”. श्रीगुरुजी को कितना उच्च पद देते थे और वे कहते थे, “ Under Guruji's benign leadership I was functioning as a

manager.” संगठक के नाते Organiser के नाते उनकी जो क्षमता थी वह विशेष थी ही किन्तु परस्पर संबंध कैसे थे यह एक देखने की बात है। हम जानते हैं की विविध कार्य स्वयंसेवको द्वारा चलाये गये। प्रायः श्री गुरुजी के कालखंड में ही शुरू हुए। बाद में भी कुछ शुरू हुए और भी कुछ शुरू होंगे। वह क्रम चलेगा क्योंकि यह तो Progressive unfoldment है। 1925 विजय दशमी के पूर्व ही प. पू. डॉक्टर जी ने संपूर्ण राष्ट्र पुनर्निर्माण की योजना बनायी थी, किन्तु जिसको प्रकाशित नहीं किया जो उनकी पद्धति थी। आजकल तो पद्धति नयी है कि एकदम 5 लोग भी पार्टी Form कर लेते हैं, Manifesto Publish कर देते हैं कि दुनिया की सूरत-शक्ल कैसे सुधारने वाले हैं। ब्रह्माण्ड की सूरत-शक्ल कैसे दुरुस्त करने वाले हैं। डॉक्टर जी की कार्य शैली दूसरी थी। रघुवंश के राजाओं के बारे में कहा गया है की फलानुमेया प्रारंभाः। माने किसी भी बड़े काम का प्रारंभ करते थे तो पहले शोरगुल नहीं मचाते थे। उसकी Advertisement propaganda नहीं करते थे। शांत चित्त से कार्य का प्रारंभ करने देते थे। जब कार्य का फल आता है तो “फलानुमेया प्रारंभाः”। लोग अनुमान लगा सकते थे कि जो फल आया है तो इसका बीजारोपण कभी न कभी हुआ होगा। इस तरह से काम करने की डॉक्टर जी की शैली थी। इसके कारण तरह तरह की सारी योजनाएँ उनके मन में रहती थी। तो भी उन्होंने इस तरह Manifesto नहीं दिया। किन्तु आज जितना हम देखते हैं मूल योजना की ही यह Progressive unfoldment है। उत्तरोत्तर होने वाला यह प्रस्फुटीकरण है। तो तरह तरह की संस्थाएँ जो निर्माण हुई थी अब इसमें गुरुजी और बालासाहब का ऐसा कुछ Joint था। उदाहरण के लिये दादासाहब आपटे बहुत साल U.P. उस समय United Press करके थी, बाद में उसको

U.N.I. बनाया गया। उसमें उन्होंने काम किया। पत्रकारिता क्षेत्र में जाना है यह सोचा था, सभी क्षेत्र में जाना है यह पहले से ही सोचा था। संघ कुछ नहीं करेगा, संघ स्वयंसेवक सब कुछ करेंगे। संघ केवल संपर्क, स्वयंसेवक, संगठन यहीं तक अपनी सीमा रखेगा। किंतु संघ से प्रेरणा और संस्कार प्राप्त किये हुए स्वयंसेवक व्यक्तिगत रूप से राष्ट्र जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में प्रवेश करेंगे और वहाँ संघ के आदर्शों के अनुकूल कार्य की रचना और विचारों का विकास करेंगे। यह विजय दशमी 1925 में सोचा गया था। उसके अनुसार जैसे जैसे संघ की शक्ति बढ़ती गयी वैसे वैसे अन्य अन्य क्षेत्रों में प्रवेश करना शुरू हो गया। तो दादासाहब आपटे की कुछ Apprenticeship United Press में हुई थी। उनके साथ श्रीगुरुजी की बातचीत हुई। अपनी भी देशी भाषाओं को लेकर 'News agency' होनी चाहिए। "हिन्दुस्थान समाचार" का विचार हुआ। जैसे वह विचार तय हुआ तो उसको ठीक ढंग से क्रियान्वित करना, उसके लिए उपयुक्त व्यक्ति कौन है , उनको locate करना motivate करना उनकी team बनाना। दादासाहब आपटे थे, बापूराव महाशद्वे, बापूराव लेले, जी.आर. माधवराव, नारायणराव तरके, वसंतराव देशपांडे और आखिर तक जिन्होंने यह काम चलाया वह बालेश्वर जी अग्रवाल यह सारी जो team बनी, वह बनाने का काम बालासाहब ने किया। जैसे वनवासी कल्याण आश्रम, प्रेरणा गुरुजी की थी। बालासाहब देशपांडे जसपुर में वकालत करते थे। उनको वनवासियों में काम करने की प्रेरणा दी, किन्तु जैसे वह काम बढ़ा, जो केवल जसपुर तक सीमित था। तो फिर उसको अखिल भारतीय स्वरूप देना चाहिए यह प्रेरणा बालासाहब ने दी और उसका अखिल भारतीय स्वरूप होना चाहिए इसलिए जो -जो सहायता संघ की ओर से होनी चाहिए वह देने की व्यवस्था भी की और उस कार्य से

इतनी एकात्मता थी, जैसे मैंने मद्रास का उदाहरण दिया, एक बड़े सम्मेलन की योजना, वनवासी कल्याण आश्रम की, एक बिहार के गुमला में और एक बस्तर में हो गयी। सम्मेलन की योजना हुई उस समय बालासाहेब की तबीयत ठीक थी। योजना होने के बाद प्रत्यक्ष सम्मेलन के समय उनकी तबीयत बहुत खराब हो गयी। उनके लिये चलना फिरना भी असंभव हो गया। फिर भी लोगों का विरोध न मानते हुए आग्रह पूर्वक गुमला में और बस्तर में वो स्वयं गये। वनवासी लोगों ने देखा कि कितने कष्ट उठाते हुए सरसंघचालक हमारे बीच में आ रहे हैं। एक कृतज्ञता का भाव उनके मन में था। तो योजना बनाना, जनरल मार्गदर्शन-क्रियान्वयन करने का काम इसी तरह उनका चलता था। विशेष रूप से हम जानते हैं कि संघ कार्य में हमेशा एक समस्या रहती है ,आगे भी रहेगी और यह समस्या है और वह सच भी है कि संघ कार्य परिस्थिति निरपेक्ष है। संघ कार्य परिस्थिति निरपेक्ष है किन्तु स्वयंसेवक का मन यह परिस्थिति सापेक्ष रहता ही है। संघ कार्य परिस्थिति निरपेक्ष है, लेकिन स्वयंसेवक का मन परिस्थिति सापेक्ष है और इसके कारण बाह्य परिस्थिति का परिणाम कम अधिक मात्रा में विभिन्न लोगों पर होता है।

इसके कारण स्वयंसेवको की मानसिकता क्या है, जिसका ज्ञान केंद्र को रहना, केंद्र का विचार क्या है इसकी जानकारी स्वयंसेवकों तक पहुंचाना यह 'Two way communication' बहुत आवश्यक होता है। यह रास्ता बालासाहब ने खोला। मुझे स्मरण है कि पहला ही प्रयोग 1945 में जब बहुत खलबली स्वयंसेवकों के मन में थी, कई तरह तरह के विचार मन में थे, कार्यपद्धति के बारे में खासकर तो उन्होंने नागपुर में जो राजाबाग मारुति मंदिर है, उसके प्रांगण में दिनभर का कार्यक्रम रखा। एक दिन में और कुछ नहीं, प.पू. गुरुजी ने

बैठना और नागपुर के सभी कार्यकर्ता एकत्रित थे और उन्होंने मुक्तचिंतन करना। जो भी विचार मन में हो वहां संकोच की बात नहीं थी, आदर के, मर्यादा के कारण कम बोलना ऐसी भी बात नहीं थी। जो विचार जिसके मन में आयेगा वह बोलेगा। पूरे दिन यह कार्यक्रम चला और कोई बात नहीं थी और फिर दूसरे सप्ताह में मा. बालासाहब घटाटे के यहाँ बैठक हुई और वही लोग, और फिर जो जो बोला गया था उसके बारे में सरसंघचालक के नाते क्या प्रतिक्रिया है वह श्री गुरुजी ने उस समय प्रकट किया। 'Two way communication' की प्रकट पद्धति बालासाहब ने शुरू की। उसी का अधिक विस्तृत स्वरूप सिंदी के जिला प्रचारकों के वर्ग में, इंदौर के विभाग प्रचारकों के वर्ग में, ठाणे में नवंबर 1972 में वर्ग हुआ उसमें इसी का विस्तृत स्वरूप हम देख सके और इसके कारण इस तरह से केंद्र के मानस की जानकारी नीचे के स्वयंसेवक तक और नीचे के स्वयंसेवक की मानसिकता केंद्र तक पहुंचाने की व्यवस्था भी बालासाहब की कुशलता की योजना के कारण हो सकी।

हमारे विजय गिरकर जी ने उल्लेख किया था कि तरह तरह से कुछ लोग जानबूझकर गलतफहमी फैलाते हैं। जैसे श्री गुरुजी के समय कहते थे, कि डॉक्टर जी का संघ अलग था, श्री गुरुजी का संघ अलग था और आगे कहा की गुरुजी का संघ अलग था, बालासाहब का संघ अलग था। माने समझते दोनों को नहीं लेकिन जानबूझ कर बुद्धिभेद करने का प्रयास होता है। वो लोग नहीं जानते कि कितने उनके घनिष्ठ संबंध थे। आखिरी दिनों में Ban (प्रतिबंध) के समय द्वारका प्रसाद जी मिश्र इनको जवाहरलाल जी ने नागपुर भेजा। श्री गुरुजी सिंदी के जेल में थे, बालासाहब आदि बाहर थे। उनके साथ मिश्रा जी की बैठक हुई। मिश्रा जी ने कहा की जवाहरलाल जी ने तय

किया है कि Ban (प्रतिबंध) उठाना है। केवल उसके लिए श्री गुरुजी ने, केवल नेहरू जी के नाम पत्र देना चाहिये कि Ban (प्रतिबंध) उठाये। तो बालासाहब ने कहा- नहीं, इतने दिन का हमारा अनुभव ऐसा है जिसके कारण आपके शब्द पर हमारा विश्वास नहीं। श्री गुरुजी ऐसा कोई पत्र नहीं लिखने वाले। मिश्रा जी ने कहा आप केवल पत्र लिखिये, Ban (प्रतिबंध) उठने वाला है, मैं आश्वासन देता हूँ। बालासाहब ने कहा कि नेहरू जी के नाम श्री गुरुजी यह पत्र नहीं लिखेंगे। फिर मिश्रा जी ने compromise निकाला की श्री गुरुजी ने नेहरू जी के नाम पत्र नहीं लिखें, किंतु मध्यस्थता करने वाले पं. मौलीचंद्र शर्मा इनके नाम Private पत्र देना। इसके आधार पर Ban (प्रतिबंध) उठाने का काम होगा और ऐसा ही हुआ। आखिरी जो पत्र था श्री गुरुजी का, नेहरू जी को नहीं था, Private letter to पं. मौलीचंद्र शर्मा को था और उसी के आधार पर Ban (प्रतिबंध) उठाने का काम हुआ। किन्तु ये जब मिश्रा जी से बात हुई तब श्री गुरुजी तो सिंदी में थे। लोगों के साथ उनका Communication नहीं था, लोगों का आना जाना नहीं था। किन्तु जब मौलीचंद्र गये तो पत्र का content सीलबंद करके उनके पास दिया और उन्होंने कहा कि इस पर आप को हस्ताक्षर करना चाहिये। बालासाहब का जब यह पत्र देखा कि इस पर आपको हस्ताक्षर करना चाहिये, गुरुजी ने तुरन्त हस्ताक्षर कर दिया। वो Private letter to मौलीचंद्र शर्मा, इनके आधार पर बाद में Ban (प्रतिबंध) हटाया गया। माने इतना विश्वास।

इनके परस्पर संबंधों के बारे में, खासकर जिन्होंने गलतफहमी फैलाना अपना धर्म माना है कितनी बात कही है। कितनी परस्पर आत्मीयता थी उनकी, इसका केवल एक उदाहरण मैं देना चाहता हूँ। शायद बाहर के लोगों को इतना मालूम

नहीं बहुत ही मार्मिक ऐसा यह प्रसंग है। गांधी हत्या हुई, शासन ने जानबूझकर संघ के बारे में गलतफहमी फैलाई जो राजनैतिक तत्व संघ को बदनाम करना चाहते थे। उन्होंने उसका लाभ उठाया। जनता में क्षोभ पैदा किया गया। और फिर यह बात हुई की एक आदमी की हत्या हुई उसका बदला दूसरे आदमी की हत्या से होना चाहिये। खून का बदला खून से, हत्या का बदला हत्या से, ऐसा कहते हुए और ऐसे जो राजनेता थे बहुत बड़े, वो Mob (भीड़) को लेकर प.पू. गुरुजी के मकान पर हमला करने के लिए आए। मकान छोटा था बालासाहब ने पहले ही व्यवस्था कर दी थी। Mob (भीड़) आ रही देखा तो 40 दंडधारी स्वयंसेवकों को अंदर रखा था। किन्तु Mob (भीड़) इतना बड़ा था कि इतने Mob (भीड़) के सामने 40 दंडधारी स्वयंसेवक कुछ नहीं कर पाते। इसलिये कई लोग गुरुजी से कहते थे आप यहाँ से सुरक्षित बाहर चले जाइये। बड़ा Mob (भीड़) है, यहाँ आप रहेंगे तो आपकी हत्या होगी। गुरुजी ने इन्कार कर दिया। उन्होंने कहा की मेरी भूमिका ये है कि मैं जिस हिंदु समाज के लिये काम करता हूँ, वही हिंदु समाज यदि मुझे नहीं चाहता, मुझे मारना चाहता है, तो मुझे मारे। जो हिंदु समाज की इच्छा होगी वही हो। मैं अपनी जान नहीं बचाऊंगा, अगर हिंदु समाज मेरी जान लेना चाहता है। तो कई लोग गये लेकिन गुरुजी हटने के लिए तैयार नहीं थे। बाहर Mob (भीड़) इकट्ठा हुआ था। मकान छोटा था। दरवाजा लकड़ी का था और वो भी पुरानी लकड़ी का दरवाजा था। आखिरी में दरवाजे को धक्के लगाना भी उन लोगों ने शुरू किया, गुरुजी मानने को तैयार नहीं थे। शायद उनके मन में यही भावना थी कि इस समय यहाँ आत्मार्पण करना यही सिद्धान्त के अनुकूल है, ऐसा कुछ विचार होगा। आखिर में बालासाहब आये और बालासाहब ने उनको कहा आप हमारे

सरसंघचालक है, हम आपके स्वयंसेवक है। सरसंघचालक के नाते आपके आदेश का पालन करना हमारा काम है। किन्तु स्वयंसेवक का भी स्वयंसेवक के नाते आप पर कुछ अधिकार है और उस अधिकार के नाते मैं कहता हूँ कि आपको यहाँ से सुरक्षित बाहर जाना चाहिये। बाहर जाने के लिए रास्ता था। गुरुजी तैयार नहीं थे। मुझे इस समय बिल्कुल समानान्तर घटना का स्मरण हो रहा है, समानान्तर घटना अपने इतिहास की। गुरु गोविंदसिंह जी चमकौर के दुर्ग में, उसको दुर्ग क्या कहा जाय उसको कच्ची गढ़ी कहते है। बहुत थोड़े लोगों के साथ थे। घेरे गए थे मुगल सेना से। मुगल सेना बहुत बड़ी थी। इतनी बड़ी सेना के साथ एकदम लड़ना भी संभव नहीं था किंतु जब घेराव हुआ तो पहले उन्होंने अपने बड़े पुत्र साहब जादा अजीतसिंह व बाद में दूसरे पुत्र साहब जादा जुझारसिंह दोनों को 10, 15 - 10, 15 लोग देकर लड़ने को गुरु गोविंदसिंह जी ने भेजा। अब लड़ने के लिए क्या भेजना था, मरने के लिए ही भेजना था। स्पष्ट था जो जायेगा मरेगा ही। इतना होने के बाद 15-20 लोग गुरु गोविन्दसिंह जी के पास रहे फिर उन्होंने कहा अब हम जायेंगे, उस समय शिष्यों ने कहा कि साहबजादा अजीतसिंह, साहबजादा जुझारसिंह उनका आत्मार्पण हुआ है। लेकिन आपकी बात दूसरी है। आप हमारे नेता है आपने हमको सिखाया है कि “आप्ये गुरु आप्ये चेला” इस युक्ति के अनुसार अब हमारी बात मानना आपके लिए बाध्य हो जाएगा। आपको हमारी बात माननी चाहिये। आप सुरक्षित बाहर निकलिये। यह अपने लिये, देश के लिये आवश्यक है। ठीक यही बात जैसे बालासाहब ने कही स्वयंसेवक के नाते हमारी बात आप को माननी पड़ेगी। यही शिष्यों ने कहा “आप्ये गुरु-आप्ये चेला” इसी उक्ति के अनुसार हम आपको कह रहे हैं और हमारी बात आप को माननी

पड़ेगी। अपनी अनिच्छा होते हुए भी गुरु गोविंदसिंह जी ने शिष्यों की बात मान ली। वैसे ही अपनी अनिच्छा होते हुए भी श्री गुरुजी ने बालासाहब की बात मान ली और सुरक्षित बाहर आये, वरना हिंदुस्थान का ओर संघ का इतिहास बदल जाता। यह हम समझ सकते हैं दोनों में इतना परस्पर संबंध था। लेकिन लोगों ने उसको तरह तरह के रंग दिये।

जैसे उन्होंने कहा 'Under his benign leadership, I was functioning as a manager'. वास्तव में “Science of Management” की शिक्षा दीक्षा न लेते हुए जन्मजात वो Manager थे, जन्मजात। बचपन में शाखा में तो Management करना ही पड़ता था। एक Philanthropist डॉ. चोलकर उन्होंने नागपुर में अनाथ विद्यार्थी गृह निकाला। यह अनाथ विद्यार्थी गृह पुराने नागपुर में था। तो अनाथ विद्यार्थी गृह में स्वाभाविक रूप से उस पुराने नागपुर के दलित और पिछड़ी जाति के अनाथ विद्यार्थी ही आते थे। उन्होंने वसतिगृह तो निकाला था। प.पू.डॉक्टर जी को उन्होंने कहा की कोई अच्छा competent आदमी दीजिये कि वो वसतिगृह की Management कर सकेगा और कैसी Management करना उसकी व्यवस्था लगा देगा। बालासाहब की वहाँ योजना हुई। 2 साल तक उन्होंने ठीक ढंग से व्यवस्था की, अनुशासन बढ़ व्यवस्था की। उसी समय उनका बाकी दलित और पिछड़े हुए लोगो के साथ संबंध आया। अच्छी Management इस नाते डॉ. चोलकर जी ने भी उनकी बहुत प्रशंसा की। आपको आश्चर्य होगा, बहुत लोगो को शायद यह पता नहीं है, 1945, 46, 47 में उन्होने एक स्टोर्स भी चलाया था। भारत स्टोर्स करके। मा. मनोहरराव ओक उनके सहयोगी रहे। भारत स्टोर्स की व्यवस्था तो Business Management थी, Regular Management वह भी Management बहुत Efficiently वे कर सके।

वैसे बहुत लोगों को ये पता नहीं होगा की उनकी पैतृक खेती थी, कृषि थी। बालाघाट जिले में कारंजा के पास आमगाँव करके गांव है, वहाँ थी। तो उन्होंने सोचा कि प्रयोग के नाते मैं स्वयं कृषि करूंगा। और उस समय का उनका अनुभव है, एक आदर्श कृषक इस नाते उन्होंने काम किया और उन्होंने उस समय कहा - जब बाकी कृषकों के सामने तो यह बात बहुत बाद में आयी तब उन्होंने कहा कि कृषको को जो कीमतें मिलती है वो ठीक नहीं है। हमारे यहां हर तीन चार साल में एक बार अकाल आता है। माने दो साल में उसको इतनी कमाई करनी पड़ती है कि तीसरे साल भी इस पर या उस पर गुजारा कर सके। यह ध्यान में रखकर कृषि उपज का मूल्य तय होना चाहिये। यह बात उन्होंने उस समय कही कि जिस समय यह बात उस हवा में नहीं थी और दूसरी बात उनके साथी किसान उनसे नाराज थे। क्योंकि उनके यहाँ काम करने वाले खेतीहर मजदूर और कारीगरों को वे पूरी रोजी देते थे। लोगो ने विरोध किया कि आप पूरी रोजी देते हैं, इसलिए हमारी Position खराब होती है। आप पूरी रोजी देते है तो हमको भी देनी पड़ेगी। तो बालासाहब ने कहा आप भी दीजिये। ये तो न्याय की बात है। तो वो बोले हम नहीं दे सकते। बालासाहब ने कहा मत दीजिये मैं मेरा क्रम बंद नहीं करूंगा। मैं खेतीहर मजदूर और कारीगरों को पूरी रोजी दूँगा। ये उन्होने चलाया। इतना होते हुए भी उनकी कृषि एक आदर्श कृषि के नाते रही। तो वहाँ की भी Management उन्होने बहुत ही अच्छे ढंग से चलाई थी।

विशेष रूप से जब तरुण भारत, यह पेपर खरीदा गया तो वह तो उनकी परीक्षा ही थी। उनके ही ऊपर भरोसा रखकर संघ के लोगों ने तय किया था कि पेपर खरीदेंगे। क्योंकि पेपर के संपादक और Management के जो लोग

थे वह सब कांग्रेस के लिए अनुकूल, ऐसे थे। संघ के लिए कुछ तो विरोधी, कुछ प्रतिकूल, कुछ कम से कम अनुकूल ऐसे लोग थे और सीधा रास्ता जो होता है जो प्रायः होता है जब Management Change होती है, कि पुराने लोगों को हटाना, नये अपने लोग लाना। वो भी नहीं करना ऐसा बालासाहब ने तय किया और पुराना जो स्टाफ था, संपादकीय जिसमें सामान्य लोग नहीं थे भाऊसाहेब माडखोलकर, तात्यासाहेब करकरे, श्री पटवर्धन, गोविंदराव गोखले, यशवंतराव शास्त्री, मानो Each one of them was great in his own right in field of journalism ऐसे लोग जो संघ के लिए विरोधी या प्रतिकूल थे। ऐसे वायुमंडल से वह पेपर लेकर आये, इनको बदला नहीं लेकिन उनके ऊपर प्रेशर भी नहीं डाला। जब कभी समय मिलता था, तरुण भारत में जाते थे। इन लोगों के साथ बराबरी के नाते बातचीत करते थे, बार बार जाते थे। सब लोगों के मन में apprehension था, आशंका थी, ये संघ का है यहाँ डिक्टेटर शिप होगी। परंतु उनको आश्चर्य हुआ की बालासाहब 2-2, 3-3 घंटे उनके साथ बातचीत चाय पान, नाश्ता करते थे और ऐसे stalwards में, पुराने लोगों में उन्होंने इतना परिवर्तन लाया जिसके कारण तरुण भारत अपने लिए अनुकूल इस ढंग से काम कर सके। इस बीच “समचार पत्रों की Management” इस विषय को उन्होंने पूरी तरह से हस्तगत किया और इसके कारण वो बता भी सकते थे, कि कोई पत्र निकालना है तो कैसे निकालना यह सलाह दे सकते थे।

उदाहरण के लिये दिल्ली में जब लोगों ने सोचा की The Motherland ये दैनिक पत्रक निकालना चाहिये। तो पहले उन्होंने warning दी पत्रक निकालिये, आज आपके पास Finance है ठीक है लेकिन पत्र का Model क्या रहे यह तय करें। उन्होंने कहा Model का मतलब ? तो बालासाहब ने कहा Mother

land का Model नागपुर टाइम्स का होना चाहिये। Indian Express, Times of India या हिंदुस्थान टाइम्स ये Model लेकर आप मत चलिये। किन्तु दिल्ली पंजाब का उत्साह था, उस समय उन्होंने दूसरा Model लिया और Mother land बंद करना पड़ा ये हम जानते हैं। तो Science of Management इस नाते उनकी एक विशेषता हर जगह दिखाई देती है और इस दृष्टि से उन्होने कहा कि “Under His Benign leadership I was functioning as a manager” बिलकुल सही है।

राष्ट्रजीवन के सभी क्षेत्रों पर उनका ध्यान था। सभी क्षेत्रों पर और हर क्षेत्र में जहां जहां आवश्यकता स्वयंसेवको को होती थी वो सहायता करते थे। वो जानते थे कि राजनैतिक क्षेत्र का महत्व है और इस दृष्टि से जैसे विद्यार्थी क्षेत्र में, मजदूर क्षेत्र में, किसान क्षेत्र में वैसे राजनैतिक क्षेत्र में भी अपने स्वयंसेवक संघ की नीति-रीति पद्धति, आदर्श लेकर काम करे और एक Model Political पार्टी बनाकर लोगों के सामने उपस्थित करे। ये उनका प्रयास रहा और खासकर ये सब जानते हैं , कि जब आपातकाल आया उस समय बाकी सारे राजनैतिक दल निष्प्रभ हो गये थे। सारे निष्प्रभ हो गये थे। उस समय RSS had to bear the brunt उस समय जो R.S.S. ने किया इसके कारण कुछ क्षण के लिए सभी राजनेताओं ने संघ की बड़ी प्रशंसा की, संघ के बारे में कृतज्ञता प्रकट की, किन्तु कृतज्ञता का भाव ज्यादा दिन तक मन में रखना यह राजनैतिक नेतृत्व का स्वभाव नहीं है इसके कारण वह बात बाद में भूल गये। किन्तु उस समय सभी ने प्रशंसा और कृतज्ञता भाव प्रकट किया था। वो सारा जो आपातकालीन संघर्ष था इसका सारा संचालन यरवदा जेल में रहते हुए बालासाहब करते थे। जो बाहर थे उनके साथ दिन प्रतिदिन उनका संपर्क

रहता था। बाहर क्या हो रहा है उसकी खबर उनको जेल में मिलती थी। उनका आदेश क्या है ये लोगों को हर दिन मालूम होता था और इस तरह से सारा संचालन उन्होंने किया। यरवदा जेल में बाकी लोगों को भी बालासाहब का परिचय हुआ। विभिन्न दलों के लोग थे, नाम लेने की आवश्यकता नहीं वो भी व्यक्तिगत संपर्क में आये। मुसलमान लोग भी संपर्क में आये और सभी के मन ने बालासाहब के प्रति फादर फिगर के नाते श्रद्धा हुई कि विभिन्न दलों के नेता भी बालासाहब के चरणस्पर्श करने लगे वापस जाते समय और मुसलमान लोग भी बालासाहब के चरणस्पर्श करने लगे और जेल के बाहर आने के बाद भी बालासाहब को मिलने को बहुत लोग आते थे किन्तु हिंदु मुसलमान एकता हो जायेगी तो हमारी मिनिस्टरशिप का क्या होगा ? ऐसी चिंता जिन लोगों के मन में थी उन लोगो ने यह भी व्यवस्था की, इस तरह का हिन्दू मुसलमानों का मिलन नहीं होना चाहिये। तो मुसलमानों में फिर से गलत फहमी फैलाने का काम राजनेताओं ने किया। किन्तु उन सब लोगों में बालासाहब के विषय में श्रद्धा का भाव था। यह उल्लेखनीय बात है।

राजनीति का महत्व वह जानते थे। साथ ही साथ राजनीति की सीमाएं भी जानते थे। खराब लोग राजनीति में रहें उसकी तुलना में अच्छे लोग शासन में रहे तो देश का नुकसान नहीं होगा, यह भी जानते थे। अच्छे लोगो का शासन में लाना चाहिए यह भी समझते थे किन्तु साथ ही साथ राजसत्ता के द्वारा ही राष्ट्र निर्माण होगा यह उनका विश्वास नहीं था। राष्ट्र निर्माण जो होगा वह सामाजिक, सांस्कृतिक शक्ति के आधार पर होगा ऐसा वो मानते थे। और इसके कारण जहाँ लोकतंत्र के अस्तित्व का ही सवाल आया, जब लोकतंत्र ही खतरे में था उस समय 1977 के चुनाव में खुलेआम बालासाहब ने घोषणा की, कि

लोकतंत्र को बचाने के लिए कांग्रेस के खिलाफ हमारे लोग काम करेंगे। उस समय जो चार्टर ओफ डिमाण्ड बताया गया था, उसमें हम क्यों लड़ाई लड़ रहे हैं, उसमें ये Clause नहीं था कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का Ban (प्रतिबंध) हटना चाहिये। इसके लिए यह Clause नहीं था। संघ का नाम नहीं था। संस्थागत अभिनिवेश की बात नहीं थी। Institutional Ego की बात नहीं थी। एक ही था कि लोकतंत्र को बचाना और लोकतंत्र को बचाया गया। तानाशाही खत्म हो गयी। जिनको शासन चलाना था, उनके हाथ में शासन की बागडोर चली जाये और फिर, फिर से लोगों को चेतावनी के रूप में बालासाहब ने कहा कि राजनीति, राजनैतिक सत्ता, इसका महत्व कितना है और संघ का उससे क्या संबंध है। तो जनता पार्टी शासन में आने के पश्चात् दिल्ली में जो Rallies हुईं उन Rallies में बालासाहब ने स्पष्ट रूप से एक विषय रखा था। तीन बार बालासाहब ने यह विषय दिल्ली की Rallies में रखा। जनता पार्टी शासन में आने के बाद राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और हिंदुत्व इन शक्तियों का मापदंड राजनैतिक नहीं हो सकता। वह मापदंड सामाजिक और सांस्कृतिक ही होना चाहिए। यह विषय तीन बार उन्होंने सामने रखा। तो इस तरह से संतुलन था। राजनीति का महत्व भी जानना, साथ ही साथ उसकी सीमाएं जानना और राष्ट्र निर्माण का कार्य लोकशक्ति के आधार पर होगा राजशक्ति के आधार पर नहीं, यह सारी बातें संतुलित रीति से उन्होंने लोगों के सामने रखी।

जहाँ तक सामाजिक समरसता का प्रश्न है, यह बताना आवश्यक है कि, संघ की विचारशैली, कार्यशैली इसकी एक विशेषता है। जैसे मैंने कहा कि विजय दशमी सन् 1925 को जो संघ की स्थापना हुई वह Reflex action नाते नहीं हुई। एक Reaction के रूप में नहीं हुई। सालों तक प.पू. डॉक्टर जी ने सोच

विचार किया था। डॉक्टर जी का सभी समकालीन कार्यों से प्रत्यक्ष संबंध था। सभी देशी-विदेशी विचारधाराओं का गहन अध्ययन था। यह सारा करते हुए उनके मन में यह लगता था कि कुछ कमी है और वह क्या है? इसका गहन चिंतन सालों तक उन्होंने किया। उसके बाद संघ की स्थापना हुई। उनको Bi-focal Vision हो गया था। Bi-focal Vision आप जानते हैं कि नीचे पढ़ने का होता है, और ऊपर का दूर का देखने का होता है। तो उनका Bi-focal Vision हो गया था। नीचे के चश्मे से दिखता था कि तात्कालिक लक्ष्य क्या है? Immediate Object वो स्वराज्य है और ऊपर के चश्मे से दिखता था कि Ultimate Object क्या है? अंतिम लक्ष्य क्या है? वो है “परम् वैभवम् नेतु मेतत् स्वराष्ट्रम्” इस ढंग से कार्य की रचना थी और इस कार्य की रचना में सारी जो योजना थी बहुत लंबी योजना थी। आज एकदम लोग जो संस्थाएं खड़ी करते हैं ऐसा नहीं था। गहन चिंतन का परिणाम था और इस दृष्टि से आगे क्या होगा इसका पूरा विचार डॉक्टर जी के सामने था। यहाँ वो सारा विषय लेने की आवश्यकता नहीं है और इस दृष्टि से जो भी नया नया कार्य बाहर के लोगों ने देखा तो कहा कि अब संघ के लोग राजनीतिक क्षेत्र में भी आए, मजदूर क्षेत्र में आए, और किसी क्षेत्र में आए ऐसा कहा। वास्तव में यह पूर्व योजना थी। जैसे जैसे Capital बड़ेगा वैसे वैसे दुकानों की संख्या बढ़ेगी। Capital के Intrest पर दुकानों की संख्या बढ़ानी है। पहले से ही योजना थी और भी नयी नयी संस्थाएं हमारे स्वयंसेवक निर्माण करेंगे, किन्तु पूर्व योजनानुसार यह सारा चला और यह सारा जो पूर्व योजना के अनुसार चल रहा तो इसमें एक शैली इस नाते, जैसे, मैंने कहा “फलानुमेया प्रारंभाः” यह विचार शैली होने के कारण पहले से declare नहीं हुआ। सभी बातें आरंभ में

थी। एकदम सारा Manifesto घोषित नहीं हुआ। धीरे धीरे प्रस्फुटीकरण हुआ। उसको Progressive unfoldment कहना चाहिए। Progressive unfoldment धीरे धीरे होता गया। उदाहरणार्थ गौ हत्या विरोध संघ की स्थापना के पूर्व ही से डॉक्टर जी को यह Article of faith था। संघ का तो था ही, किन्तु उसको समय की आवश्यकता के , अनुसार विशेष आग्रह जिसको thrust कहते हैं, इस रूप में प.पू. श्री गुरुजी के कालखंड में आया। जो गौ हत्या विरोध आंदोलन हुआ। “स्वदेशी” अभी स्वदेशी जागरण मंच के नाम से काम चल रहा है। किन्तु स्वदेशी का आग्रह पहले से ही रहा। यहाँ तक कि नागपुर में जो स्वदेशी भंडार चलता था वहाँ Counter पर बहुत समय तक डॉक्टर जी भी बैठते थे। पहले से ही स्वदेशी का आग्रह रहा, किन्तु विशेष आग्रह, thrust के रूप में परिस्थिति की आवश्यकता के अनुकूल इस समय स्वदेशी जागरण मंच के रूप में आया। वैसे, ही सामाजिक समरसता यह आरंभ से ही थी। जब मैंने कहा बालासाहब बाल स्वयंसेवक थे उस समय अपने कर्मठ परिवार के रसोई घर में दलित स्वयंसेवक बंधुओं को ले जाते थे यह सामासिक समरसता छोड़ कर और क्या थी। स्वयं डॉक्टर जी के जीवन में आता है। मेरे गांव में , आर्वी गांव में एक जरठ युवती का विवाह उस युवती के मामा ने पैसे की लालच में आकर तय किया था। डॉक्टर जी को पता चला उनको बात बर्दाश्त नहीं हुई। वो आए, उन्होंने देखा कि वो विवाह नहीं होगा ,उन्होंने वह तोड़ा और उसी युवती का विवाह दूसरे अनुरूप वर के साथ, युवक के साथ उन्होंने विवाह करवा दिया। उसकी प्रसिद्धि नहीं की, आजकल Modern Fashion जो है , Propaganda , Image building की, थोड़ा सा काम करना और बहुत प्रसिद्धि करना ऐसा नहीं। लेकिन यह जो है सामाजिक कुरीति का विरोध चाहे बाल

विवाह रहे, चाहे दहेज वाली प्रथा रहे, सभी बातों का ये मूल से विरोध है। किन्तु इसका एक Propaganda कुछ लोगों ने तो ऐसा किया कि Propaganda करते जाना, काम कुछ नहीं करना। अपनी ऐसी पद्धति नहीं रही। सामाजिक समरसता पहले से ही थी। लोगों ने खासकर के महाराष्ट्र के, एक ऐसा वायुमंडल निर्माण किया और हमारे विजय गिरकर ने उसका उल्लेख भी किया कि गुरुजी और बालासाहब दो ध्रुव के समान एक बिलकुल Orthodox और एक बिलकुल Progressive गलत बात है। बहुत पहले 7 अक्टूबर 1945 को महाराष्ट्र में एक सुप्रसिद्ध अंतरजातीय विवाह हुआ। नवले- करपे ऐसा विवाह था। अंतरजातीय था। उस अंतरजातीय विवाह के लिए शुभेच्छा और आशीर्वाद भेजने वालों में महात्मा गांधी और सावरकर जी के साथ श्री गुरुजी का भी शुभेच्छा संदेश उस विवाह के लिए था जो उन्होंने ही सारा छपवाया था। 7 अक्टूबर 1945 की बात है। इतना है कि Progressive लोगों के समान उसका डिम-डिम बजाना अपनी पद्धति में नहीं है। तो सिद्धांत मूल से लेकिन परिस्थिति की आवश्यकता के अनुकूल और thrust के रूप में देना यह काम बालासाहब के समय हुआ और वो उन्होंने बहुत ही सक्षमता के साथ किया यह हम जानते हैं। हम जानते हैं कि कठिन परिस्थिति में भी बालासाहब ने इतना संतुलन भी रखा और आग्रह भी छोड़ा नहीं। सवर्ण लोगों को बताया कि तुमने दशको तक - शतकों तक दलित बंधुओं के साथ अन्याय किया है। अत्याचार किया है और पहली बार जब वो आरक्षण का सवाल खड़ा हुआ था। अभी तो आरक्षण के सवाल ने केवल Political Character लिया है। पहली बार जब आरक्षण का सवाल खड़ा हुआ था उस समय उन्होंने स्पष्ट कहा कि, आरक्षण के बारे में सोचते समय हर एक सवर्ण हिंदु के मन में यह कल्पना करनी

चाहिए कि यदि उस दलित जाति में मेरा जन्म होता, जिस दलित जाति पर शतकों तक अन्याय हो रहा है। तो मेरी मनःस्थिति क्या होती ? मेरी प्रतिक्रिया क्या होती? यह कल्पना मन में करके फिर आरक्षण के प्रश्न पर विचार करो ऐसा उन्होंने उस समय कहा। सभी सामाजिक प्रश्नों के बारे में अभी वसंत व्याख्यान माला का उनका जो भाषण है उसका भी उल्लेख हुआ। राष्ट्र सेविका समिति का अखिल भारतीय सम्मेलन नागपुर में था उस समय अंतरजातीय विवाह का उन्होंने प्रतिपादन किया। दहेज वगैरह कुरीतियों के खिलाफ वह हमेशा बोलते रहे और सामाजिक समरसता यह विषय उनके मन में कितना था, सरसंघचालक बने Officially घोषित भी हुआ। प. पू. श्री गुरुजी ने लिखा था कि तृतीय सरसंघचालक पद का ग्रहण करना तो मासिक श्राद्ध के समय वह होने वाला था। Official सरसंघचालक पद ग्रहण करने के लिए जाते समय मंच पर जाने के पहले महात्मा फुले इनकी प्रतिमा को पुष्पहार समर्पण किया, उनको वंदन किया और उनका आशीर्वाद लेकर मंच पर गये और फिर वहाँ उन्होंने सरसंघचालक पद का ग्रहण घोषित किया यह दिखता है कि किस तरह उनके मन में इस विषय में एकात्मता थी। यह एकात्मता ,जो- जो राष्ट्र पुरुष है, सबके मन में रही। अभी जो कहा विजय गिरकर ने डॉ.आम्बेडकर जी के बारे में। पाश्चात्य देशों में सिद्धान्त त्रयी का बोलबाला है। Liberty , Equality, Fraternity स्वातंत्रता, समता, बंधुता पू. डॉ. बाबासाहब अंबेडकर ने कहा कि मैं इन सिद्धान्त त्रयी को मानता हूँ किन्तु ऐसा कोई न समझे कि मैंने ये सिद्धान्त त्रयी, फ्रेंच राज्य क्रांति से उठाई है , नहीं मेरी प्रेरणा फ्रेंच राज्य क्रांति से नहीं है, ये सिद्धान्त त्रयी मेरे गुरु भगवान बुद्ध से उठायी है और जहाँ तक पाश्चात्य देशों का सवाल है, पू. डॉ. अंबेडकर जी ने कहा

पाश्चात्य देश तो इसको Implement नहीं कर सके। घोषणा की स्वातंत्र्य, समता, बंधुता। स्वातंत्र्य की स्थापना की तो समता बिगड गयी। समता की स्थापना करने गये तो स्वातंत्र्य खत्म हो गया। स्वतंत्र्य और समता दोनों एक साथ नहीं चला सके इसका कारण ? अंबेडकर जी ने इसका कारण यह कहा कि तीसरा जो फ़ैक्टर है बंधुता, इसका तो उदय ही नहीं हुआ, इसका निर्माण ही नहीं हुआ और उन्होने साफ कहा जब तक बंधुता निर्माण नहीं होती तब तक स्वातंत्र्य और समता दोनो साथ साथ जिंदा नहीं रह सकते और फिर उन्होंने कहा कि इसी बंधुता को, मैं “धर्म” यह संज्ञा देता हूँ ऐसा पू. अंबेडकर जी ने कहा। जिसको उन्होंने “धर्म” यह संज्ञा दी, जिसको बंधुता ऐसा उन्होंने कहा, वही अभिप्राय समरसता इस शब्द का पू. बालासाहब देवरस का है।

तो यह संदेश सभी राष्ट्र पुरुषों ने दिया है। बिलकुल महात्मा फुले हो, अंबेडकर जी हो, साहू छत्रपती हो, राजाराम मोहन राय, केशवचंद्र सेन, ईश्वरचंद्र विद्यासागर हो, स्वामी दयानंद जी, लाला हंसराज जी, स्वामी श्रद्धानंद हो, गुरु देव नारायण गुरुस्वामी केरला के हो, सभी लोगों ने यह समरसता का संदेश दिया। लोग भूल जाते है - Public memory is short उसको फिर से उज्वल करने के लिये हमारे मा.शेषाद्री जी ने कहा कि बालासाहब की स्मृति में यह जो मासिक स्मृति दिन होगा “सामाजिक समरसता दिन” इस नाते हमको मनाना चाहिये। तो सभी लोगों की यह जो परंपरा है। उसी परंपरा में सामाजिक समरसता का संदेश पू. बालासाहब देवरस का है। इसको हम ध्यान में रखें और यहाँ से जाते समय हम निश्चय करें कि यह सामाजिक समरसता हम अपने जीवन में लायेंगे और इसका संदेश जहाँ जहाँ हमारा प्रवेश है ,एसे

सब लोगों को यह संदेश पहुँचायेगें, इतना हम प्रण करें। इतना ही इस समय कहना पर्याप्त है।

(16 जुलाई 1996 को मुंबई में श्री दत्तोपंत जी ठेंगड़ी द्वारा दिया गया भाषण।)